नागरिक प्रतिरोध क्या है ?

नागरिक प्रतिरोध का सरल अर्थ सामान्य लोगों द्वारा अहिंसात्मक तरीके से अपने अधिकारों, स्वतंत्रता और न्याय के लिए लड़ने का एक तरीका है। नागरिक प्रतिरोध में लगे लोग सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तन के व्यापक उद्देश्य से विभिन्न रणनीतियों का प्रयोग करते हैं - जैसे कि हड़ताल, बहिष्कार तथा सामूहिक प्रदर्शन । दुनिया भर में, नागरिक प्रतिरोध को विभिन्न नामों-अहिंसक संघर्ष, प्रत्यक्ष कार्यवाही, जनशक्ति , राजनीतिक अवज्ञा और सामूहिक प्रदर्शन के द्वारा जाना जाता है। अलग-अलग नामों और रणनीतियों के बावज़ूद नागरिक प्रतिरोध का मूल स्वरुप एक ही होता है।

नागरिक प्रतिरोध आंदोलन शक्तिशाली होते हैं क्योंकि वे एक स्वतंत्र, न्यायपूर्ण समाज के लिये एक नई दृष्टि प्रस्तुत करते हैं। साथ ही मौज़ूदा व्यवस्था के विकल्प के रूप में सामूहिक भागीदारी के साथ नई स्वाधीनता और न्यायोचित समाज का आग्रह करते हैं। जब लोग, अन्यायी शासकों के साथ अपने सहयोग को समाप्त करने का विकल्प चुनते हैं तब वास्तव में शासन का कार्य और अधिक कठिन हो जाता है। जब अधिकाधिक लोग अवज्ञा का मार्ग चुनते हैं, तो शासन व्यवस्था निरर्थक साबित होने लगती है। तब उसे समाप्त कर देने अथवा बदल देने के अलावा सारे विकल्प भी समाप्त हो जाते हैं। जब ऐसे नागरिक प्रतिरोध - अच्छी तरह रणनीतियों और संसाधनों से लैस होते हैं तब शासन व्यवस्था व्यापक तथा टिकाऊ जनांदोलनों, नागरिक विघटन तथा सतत नाफ़रमानियों के समक्ष खड़ी नहीं रह सकती।

इसीलिये कई प्रतिरोध आंदोलन और अभियान, अपने विरोधियों के खिलाफ सफल रहे हैं। पिछली शताब्दी के हर दशक में, छहों महाद्वीपों में, अहिंसक रणनीतियों का उपयोग करते हुए अनेक लोकप्रिय आंदोलनों ने दमनकारी शासन को खत्म किया, सैन्य आधिपत्यों का विरोध किया और समाज में न्याय तथा स्वतंत्रता स्थापित करने में सफल रहे। उदाहरण के लिए, दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद समाप्त होने में नागरिक प्रतिरोध महत्वपूर्ण था । ऐसे ही प्रयोग संयुक्त राज्य अमेरिका में महिलाओं के अधिकारों, नागरिक अधिकारों और श्रमिक अधिकारों को मजबूती देने के लिए किये गये। इन्हीं नागरिक प्रतिरोधों ने फिलीपींस, चिली, इंडोनेशिया, सर्बिया और अन्य स्थानों में तानाशाहों को पदावनत किया। इसका इस्तेमाल डेनमार्क और पूर्वी तिमोर में विदेशी कब्जे को रोकने में किया गया । यह ब्रिटेन से भारतीयों द्वारा स्वतंत्रता प्राप्त करने में सहायक था; इसने पूर्वी यूरोप में कपटपूर्ण किये गये चुनावों को उलट दिया, लेबनान में सीरिया के कब्जे को खत्म कर दिया । नागरिक प्रतिरोधों के रास्ते और कई अन्य देशों में मानव अधिकार, न्याय और लोकतांत्रिक स्वशासन स्थापित किया गया है।

प्रमुख धारणाएँ

नागरिक प्रतिरोध बनाम नैतिक अहिंसा

नागरिक प्रतिरोध, राजनीतिक विवाद का एक रूप है। नैतिक अहिंसा उन सिद्धांतों का एक तंत्र है जो हिंसात्मक जवाबों मे रोक लगाती है। कुछ सफल नागरिक प्रतिरोध आंदोलनों जैसे कि भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष और अमेरिकी नागरिक अधिकार आंदोलन में प्रतिभागियों ने नैतिक अहिंसा का प्रचार किया । नागरिक प्रतिरोधों के इतिहास में ऐसे कम ही प्रकरण हैं जहाँ इसका उपयोग निज़ी स्वार्थों को पूरा करने के लिये किया गया हो। बल्कि ज़्यादातर परिस्थतियों में सत्य यह है कि नागरिक प्रतिरोध ही बहुसंख्यक लोगों को प्रेरित करते हुये संघर्ष का सर्वग्राही और सर्वोत्तम माध्यम था।

एकाधिकार बनाम बहुलतावादी ताक़त

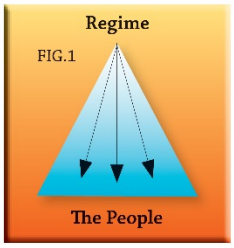

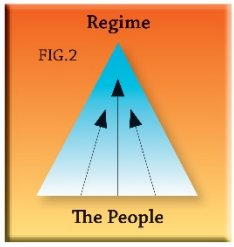

कई समाजों में, शक्ति का प्रचलित दृष्टिकोण, एकाधिकार का पर्याय है (चित्र 1), जहाँ सामान्य लोग सद्भावना और निर्णय के लिये सरकार और अन्य संस्थानों पर निर्भर होते हैं। जहाँ शिखर पर खड़े होने वाले उन लोगों को शक्ति के केंद्र के रूप में देखा जाता है, जिनके पास सबसे अधिक धन और हिंसा की क्षमता होती है। एकाधिकार की यह ताकत स्वयं की स्थापित करती हुई, लगभग स्थायी और आसानी से न बदली जा सकने वाली प्रतीत होती है। इसके विपरीत, नागरिक प्रतिरोध का सर्वथा अलग आधार होता है, जहाँ शक्ति का बहुलतावादी दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है (चित्र 2)। जो यह मानता है कि - सरकार अथवा शक्ति के केंद्र मूलतः नागरिकों द्वारा अनुपालन पर निर्भर होते हैं। बहुलतावादी विचार में, समाज के कई हिस्सों की मान्यता और भागीदारी के आधार पर शक्ति को शक्ति ही निर्धारित करती है। जिसका आधार लोगों द्वारा सहयोग पर निर्भर करता है। लोगों का सहकार और समन्वित शक्ति वास्तव में एकाधिकारवादी राज्य के निर्णयों को बेअसर कर सकता है; जो कि नागरिक प्रतिरोध का मूल है।

बहिष्कार और संलग्नता की कार्यवाहियां

नागरिक प्रतिरोध में लोगों ने अब तक जो रणनीतियाँ अपनाई हैं उन्हें दो वर्गों में बांटा जा सकता है। बहिष्कार से

तात्पर्य नागरिकों द्वारा उन दायित्वों की अवहेलना है - जो सामान्य तौर पर उनसे अपेक्षित होते हैं। ऐसे कृत्यों के उदाहरणों में कर्मचारी हड़ताल, कर इनकार और उपभोक्ता बहिष्कार शामिल हैं । संलग्नता की रणनीति में नागरिकों द्वारा ऐसी कार्यवाही की जाती है जो प्रायः उनसे अपेक्षित नहीं होती जैसे संघर्ष, जनप्रदर्शन, धरना तथा नागरिक नाफ़रमानी के अन्य तरीक़े आदि। इन तरीकों के रणनीतिक अनुक्रमों के कारण अक्सर प्रतिद्वंदियों द्वारा यथास्थिति बनाये रखना कठिन अथवा असंभव हो जाता है। यह सामान्य लोगों को प्रतिरोध में शामिल होने के लिए प्रेरणा भी दे सकता है, क्योंकि रणनीति की विविधता - उच्च जोखिम और कम जोखिम, सार्वजनिक और निजी, केंद्रित या विकेन्द्रीकृत हो सकती है जिससे समाज के कई हिस्सों से लोगों को भाग लेने में मदद मिलती है।

एकजुटता, नियोजन और अहिंसात्मक अनुशासन

सफल नागरिक प्रतिरोध के तीन मुख्य सिद्धांत एकता, नियोजन और अहिंसक अनुशासन हैं। एकजुटता प्रायः उन लोगों को प्रेरित करते हुये की जाती है जो समाज के विभिन्न वर्गों से आने के बावज़ूद अपने सवालों के जवाब के लिये सर्वग्राही लक्ष्य के प्रति सहमत हो जाते हैं। नियोजन से तात्पर्य आंदोलन का वह रणनीतिक अनुक्रम है जो कि परिस्थितिओं के सूक्ष्म विश्लेषण और अवसरों के आधार पर निर्धारित किया जाता है। इसमें प्रत्याशित प्रभावों और नफ़ा-नुक़सानों के सापेक्ष वैकल्पिक कदम सुनिश्चित किया जाना भी शामिल है। अहिंसात्मक अनुशासन का अर्थ वह रणनीतिक प्रतिबद्धता है जहाँ केवल अहिंसात्मक तौर-तरीक़ों को कार्यवाही में शामिल किया जाता है; क्योंकि किसी भी प्रकार की हिंसा न केवल सामान्यजनों की भागीदारी को कम कर देता है बल्कि आंदोलन को ग़ैरजवाबदेह भी बना देता है। इससे संभावित सहयोग का दायरा कम हो जाता है और लोगों का झुकाव भी सीमित हो जाता है।

दस सवाल

1. नागरिक प्रतिरोधों का उपयोग कर आम लोगों द्वारा शक्तिशाली शासकों को कैसे हरा दिया जाता है?

कोई शासक परम्परागत रूप से शक्तिसम्पन्न नहीं होता है। शासक तभी शक्तिशाली होता है जब उसे लाखों लोगों के द्वारा प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से समर्थन हासिल होता है। एक शासक को नियंत्रण बनाए रखने के लिए ज़रूरी है कि पुलिस, सैन्य, न्यायपालिका और नौकरशाह अपने दायित्वों का वहन करे। इसके साथ ही शासन के अंतर्गत समाज में लोगों को नियमित रूप से काम करना चाहिये , करों का भुगतान करना और बाज़ार व्यवस्था में जुड़ना चाहिए और साथ ही राज्य के स्वामित्व वाले या लाइसेंस वाले व्यवसायों का समर्थन करना चाहिये। शिपिंग और परिवहन में काम करने वाले लोग, साथ ही साथ संचार और उपयोगिताओं में भी, सामान ले

जाने और सेवाओं को जारी रखना चाहिए। ये ऐसे कुछ उदाहरण हैं जिनका समर्थन एक सुचारु शासन के लिये महत्वपूर्ण होता है।

नागरिक प्रतिरोध के आयोजकों में शासन के इन कार्यप्रणालियों को बनाये रखने, बिगाड़ने अथवा बाधित करने के लिये उपयुक्त रणनीतियों की गहरी समझ होनी चाहिये। असंतोष और विरोध के लिए बड़ी संख्या में लोगों को इकट्ठा करने से शासकों की वैधता कम हो सकती है, खासकर यदि दमन उनके अधिकारों के विरुद्ध किया जाता है। राज्य के नियंत्रण को खारिज करते हुए, प्रतिरोध आंदोलन को बनाए रखने से शासन की व्यवस्था चरमरा जाती है। एक बार जब शासन की निष्ठा कम हो जाती है, तो किसी भी प्रकार के दमन को लागू करना शासन के लिये के लिए कठिन हो जाता है।

2. नागरिक प्रतिरोध कैसे शुरू होता है ?

कई सफल नागरिक प्रतिरोध अभियान, पहले आम लोगों की कार्यवाही करने की क्षमता का निर्माण शुरू करते हैं। लोगों को व्यवस्थित करने और एकता का निर्माण करने के लिए स्थानीय,कम जोखिम वाली रणनीति अविश्वसनीय रूप से महत्वपूर्ण हो सकती है उदाहरण के लिए, महात्मा गांधी भारत में अपना पहला प्रमुख नागरिक प्रतिरोध अभियान शुरू करने से पहले, महीनों और वर्षों आम लोगों से मिलने और उनकी शिकायतों, उम्मीदों और भयों के बारे में सीखने में व्यस्त थे। उन्होंने एक भावना विकसित की और लोगों की निष्ठा और सहयोग को जीत लिया। उन्होंने लोगों को रचनात्मक काम में शामिल होने के लिए भी प्रोत्साहित किया। समाज सेवा से महात्मा गाँधी नें उन लोगों को एकजूट कर दिया - जिनका राज्य के प्रति अविश्वास तो था किन्तु शासन का प्रतिरोध करने में जो अपने आप को कमज़ोर मानते थे।

एक बार नागरिक प्रतिरोध शुरू होने के बाद वह स्थानीय मुद्दों को जोड़ते हुये व्यापक होने लगता है। जैसे पोलैंड में नागरिक प्रतिरोध की शुरुआत एक जहाज़ में हड़ताल के साथ हुआ। इसमे सफलता मिलते ही वह एक ट्रेड यूनियन के रूप मे व्यापक हो गया जिसने पोलैंड की राज्य व्यवस्था को नागरिक अधिकारों के प्रति जवाबदेह बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी तरह संयुक्त राष्ट्र अमेरिका मे रंगभेद के विरुद्ध नागरिक प्रतिरोधों ने बहिष्कार और धरने के माध्यम से अभूतपूर्व सफलता हासिल की। इन नागरिक प्रतिरोधों ने व्यापक जनसमर्थन से शासन को नागरिक अधिकारों के प्रति जवाबदेह बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

3. मैं विरोध प्रदर्शन कैसे करूँ ?

एक आंदोलन के रणनीतिक योजनाकारों को यह पता होना चाहिए कि उनके लक्ष्य क्या हैं, उनके आंदोलन और उनके प्रतिद्वंदियों की ताक़त, कमज़ोरी और क्षमतायें क्या हैं साथ ही किस तीसरे पक्ष की मदद ली जा सकती है। जब एक आंदोलन अपने छोटे, मध्य और दीर्घकालिक लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करते हुये अपनी स्थिति का एक विस्तृत और व्यवस्थित तथ्यात्मक विश्लेषण करते है, तो यह चुनने की बेहतर स्थिति में होंगे कि वह किस रणनीति के आधार पर कार्य करें। उस समय, अगर

आंदोलन एक मुख्य रणनीति के रूप में विरोध प्रदर्शनों के लिए सामयिक विकल्प चुनता है और उन्हें सफल बनाने के बारे में सीखना चाहता है, तो ऐसा करने के लिए कई तकनीकी और सामरिक संसाधन उपलब्ध हैं।

4. **यदि विरोध नहीं, तो क्या होगा?**

बहुत से लोग सोचते हैं कि विरोध, नागरिक प्रतिरोध आंदोलनों की प्राथमिक गतिविधि है। हालांकि, विरोध कई विभिन्न प्रकार की रणनीतिओं में से केवल एक है जो नागरिक प्रतिरोधी अपने संघर्ष में उपयोग कर सकते हैं। चयन करने के लिए अहिंसक कार्रवाई की दो सौ से ज्यादा रणनीतियां हैं। बहिष्कार के प्रकार (उपभोक्ता, राजनीतिक और सामाजिक); काम मंदी; किराए, करों और शुल्क का भुगतान करने से इनकार; याचिकाओं; सविनय अवज्ञा; धरना ; नाकेबंदी; और समानांतर संस्थानों के विकास रूप में नागरिक प्रतिरोधों के अनेकों सफल उदाहरण मौज़ूद हैं।

रणनीति की पसंद और अनुक्रमण, समय की परिस्थिति और मूल्यांकन पर निर्भर करता है, साथ ही साथ इसकी क्षमताओं और उद्देश्यों को भी विश्लेषण मे शामिल किया जाता है। अगर कोई आंदोलन बहुत मजबूत नहीं है, तो अपने संदेश को व्यक्त करने और / या प्रतिद्वंदी को बाधित करने के लिए कम-जोखिम वाले रणनीति, जैसे कि बहिष्कार या प्रतीकों द्वारा प्रदर्शन आदि का विकल्प चुन सकता है। बाद की अवस्था में जब आंदोलन मजबूत होता है, तो वह अधिक ध्यान केंद्रित करने वाले विकल्पों जैसे कि रैलियों, जुलूस, विरोध प्रदर्शन, या सामूहिक नागरिक अवज्ञा को संचालित करने में सक्षम हो सकता है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि विरोध प्रदर्शन अक्सर नागरिक प्रतिरोधों पर विचार करने वाले लोगों के लिए सबसे परिचित कार्रवाई होते हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि वे कार्रवाई का एकमात्र या सर्वोत्तम तरीका है। स्थिति के आधार पर, कई अन्य रणनीतियां हैं जो आंदोलन को कम लागत पर बेहतर परिणाम प्रदान कर सकते हैं। रणनीति तय करने में रचनात्मकता और सामरिक सोच अत्यंत महत्वपूर्ण है कि कौन-सी रणनीति कारगर होगी।

5. **यदि आंदोलन में कोई करिश्माई नेता नहीं हो तो क्या होगा ?**

कई ऐतिहासिक आंदोलनों ने करिश्माई नेताओं के बिना प्रभावी नागरिक प्रतिरोध छेड़ा है। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद विरोधी आंदोलन ने बहुत अच्छा प्रभाव उत्पन्न किया जबकि उसके नेता जेल में थे और उन्हे आंदोलन से काट दिया गया था। जन आंदोलनों के नेताओं के व्यक्तिगत आकर्षण या बोलने की क्षमता की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण यह है कि कैसे एक आंदोलन में विभिन्न प्रतिभागियों के

प्रतिनिधित्व करने को व्यापक गहनता प्रदान करे। खतरों को ध्यान में रखते हुए कार्रवाई के वैकल्पिक रणनीतियों को सर्वग्राही बनाये।

करिश्माई नेताओं पर अधिक निर्भरता का अपना विशेष जोखिम है । कभी-कभी ऐसे नेताओं को सत्ता साझा करने की पेशकश शासकों द्वारा किया जा सकता है या उन्हें गिरफ्तार किया जा सकता है। इन परिस्थितियों में शेष प्रतिनिधियों के समक्ष सामूहिकता के अनुरूप रणनीतियों और विकल्पों को चुनने की क्षमता होनी चाहिये।

6. अगर मुझे नहीं लगता कि नागरिक प्रतिरोध मेरे देश में काम करेगा तो क्या होगा?

नागरिक प्रतिरोध हमेशा सफल नहीं होता है, लेकिन यह दुनिया भर के कई देशों में कारगर रहा है। उन परिस्थितिओं में भी जहाँ विशेषज्ञों ने मान लिया था कि नागरिक प्रतिरोध सफल हो नहीं सकता। चिली के जनरल ऑगस्टो पिनोशेत को दुनिया के सबसे क्रूर तानाशाहों में से एक माना जाता था और बहुत से लोग सोचते थे कि नागरिक प्रतिरोध उसे हटाने में महत्वपूर्ण हो ही नहीं सकता। लेकिन नागरिक प्रतिरोध से ही यह संभव हुआ। ऐसे ही कुछ लोगों को संदेह था कि सर्बियाई तानाशाह स्लोबोडन मिलोज़विक, जिसे "बाल्कन का बुचर" नाम दिया गया था, को अहिंसक दबाव से बाहर नहीं किया जा सकता । फिर भी, जब मिलोवेविच ने अपने सैनिकों और पुलिस को सैकड़ों-हजारों नागरिकों को दबाने के लिए आदेश दिया तो सुरक्षा बलों ने आदेशों का पालन करने से इनकार कर दिया। मिलोवेविक के पास तब नागरिकों की बात मानने के अलावा और कोई विकल्प ही नहीं रहा।

यदि आप अभी भी अनिश्चित हैं कि क्या नागरिक प्रतिरोध आपकी स्थिति में काम कर सकता है, तो संभावित विकल्पों पर विचार करें । यदि आप यथार्थवादी हैं तो राजनीतिक व्यवस्था में सुधार के लिये चुनाव में भाग लेना; कानूनी प्रणाली में सुधार के लिये याचिका दायर; विरोधियों के साथ वार्ता; समर्थन के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपील; और बगावत का प्रयास आदि सभी विकल्प हैं जो दुनिया के विभिन्न हिस्सों में सफलतापूर्वक आजमाये गए हैं। हालांकि यह निश्चित है कि नागरिक प्रतिरोध सफल होगा, यह भी निश्चित है कि कार्रवाई की कोई प्रचलित अथवा बिलकुल नयी रणनीति भी सफल हो सकती है।

नागरिक प्रतिरोधों के अन्य रणनीतियों में विभिन्न नागरिक समूहों को एकजुट करना, शासकों की गैर - जवाबदेहियों को चुनौती देना, दमन के विरुद्ध खड़े होना और शासकों के भीतर मतभेद पैदा करना आदि भी कारगर रहे हैं। इतिहास में कई समूहों ने इन विकल्पों को नागरिक प्रतिरोध के लिए चुना है। हालांकि कभी-कभी इसका उपयोग स्थानीय स्तर पर राजनीतिक परिवर्तन - जैसे चुनाव, कानूनी चुनौतियों, वार्ता, और व्यवस्था में सुधार करने के पारंपरिक साधनों के साथ किया जाता है।

7. क्या होगा यदि मेरा विरोधी हिंसा का उपयोग करता है ?

आपको उम्मीद करनी चाहिए कि कुछ बिंदु पर आपका विरोधी हिंसा का उपयोग करेगा । ऐतिहासिक रूप से यह लगभग हमेशा होता रहा है। फिर भी प्रतिद्वंदी के द्वारा हिंसा का मतलब यह नहीं है कि नागरिक प्रतिरोध आंदोलन विफल हो गया है। नागरिक प्रतिरोध आंदोलन विभिन्न तरीकों से हिंसक दमन के विरुद्ध काम करती हैं जिससे दमन और उत्पीड़न को कम किया जा सकता है।

सबसे पहले, हिंसक दमन से बचने या उसे निष्प्रभावी करने के लिए, नागरिक प्रतिरोध आंदोलन उन रणनीतिओं का उपयोग करना शुरू कर सकते हैं जो हिंसा से दबाये नहीं जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, उपभोक्ता बहिष्कार, जिसमें लोग कुछ लक्षित उत्पादों को नहीं खरीदते हैं। इन विकेन्द्रित नागरिक प्रतिरोधों में कौन शासन के बहिष्कार में भाग ले रहे हैं और कौन नहीं है यह पता लगाना मुश्किल या असंभव है। यदि विरोध प्रदर्शन या अन्य सार्वजनिक और केंद्रित रणनीति दमित हो रही है, तो गैर-राजनीतिक प्रतिरोध या विकेन्द्रीकृत और गैर-शारीरिक रणनीति जैसे फीस या करों का भुगतान करने से इनकार करना या एक सामान्य हड़ताल भी एक आंदोलन के लिए बेहतर विकल्प हो सकता है।

दूसरा, नागरिक विरोधी आंदोलन उनके प्रतिद्वंदी के दमन को पीछे छोड़ने के लिए अभिनव रणनीति का उपयोग कर सकते हैं। दुनिया के समक्ष दमन को चित्रों और कहानियों के साथ प्रचारित करना, शासन के दमन को और अधिक महंगा बना सकता है - यह प्रत्यक्ष आंदोलन के मुकाबले ज्यादा प्रभावी साबित हो सकता है। जब एक आंदोलन दमन के कुछ कृत्यों को उजागर करता है, तो इसका परिणाम सार्वजनिक और अंतरराष्ट्रीय समर्थन के भारी नुकसान के रूप में हो सकता है।

तीसरा, सिविल प्रतिरोध के मामले हैं - जैसे कि 1986 में फिलीपींस, 1988 में चिली, 2000 में सर्बिया और 2004 में यूक्रेन, जहां नागरिक प्रतिरोध के विपक्ष द्वारा सुरक्षाबलों मे विभाजन पैदा कर दिया गया जिससे शासन के दमन की धार कुंद हो गयी। यहाँ नागरिक प्रतिरोध सौद्देश्य ऐसा डिज़ाइन किया गया था जिससे दमनकारी शासन के सुरक्षाबलों को ही शासन के विरुद्ध खड़ा किया जा सके।

8. **अगर मेरे प्रतिरोधी को राजी नहीं किया जा सका तो क्या होगा ?**

नागरिक प्रतिरोध में हमेशा कट्टर प्रतिद्वंदियों को अपने पक्ष में लाना आवश्यक नहीं होता है। बल्कि तटस्थ लोगों को नागरिक प्रतिरोध के व्यापक समर्थन में खड़ा करना अपेक्षाकृत प्रभावी हो सकता है।

याद रखें, नागरिक प्रतिरोध शक्तिशाली इसलिये है क्योंकि यह हज़ारों या दसियों व्यक्तियों के उस विश्वास और व्यवहार को बदलता है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उत्पीड़न का समर्थन करते हैं। जब आपके प्रतिद्वंद्वी के सूत्रों का स्रोत कमजोर हो जाता है, तो उनकी शक्ति कमतर होने लगती है जिससे वह महसूस करता है कि वह अब नतीजे पर नियंत्रण नहीं कर सकता है, और इसलिए वह बातचीत करने के लिए मजबूर हो जाता है।

उदाहरण के लिए, दक्षिण अफ्रीकी शहर पोर्ट एलिजाबेथ में रंगभेद विरोधी आंदोलन द्वारा श्वेत व्यवसायों के विरुद्ध 1985 के बहिष्कार से इतना नुकसान पहुंचा था कि उन्होंने सरकार को नीतियों को बदलने के लिए मज़बूर कर दिया। इन व्यवसायों को आंदोलन के उद्देश्यों से सहमत होने के लिए राजी नहीं किया गया, लेकिन उन्हें एहसास हुआ कि सरकार के दमन का समर्थन जारी रखने की तुलना में उन्हें आंदोलन की कुछ मांगों को स्वीकार करने के लिए तैयार हो जाना चाहिये।

9. **अगर हम बहुत लंबा इंतजार नहीं कर सकते तो क्या होगा ?**

नागरिक प्रतिरोध हमेशा एक प्रभाव बनाने के लिए परिस्थितियों और रणनीतियों के अनुरूप समय लेता है। फ़िलीपींस में तानाशाह फर्डिनेंड मार्कोस को बाहर करने के लिए कुछ साल नागरिक प्रतिरोध सतत जारी रहे। नागरिक प्रतिरोध में सफलता का निर्धारण समय नहीं बल्कि आंदोलन के एकीकरण और रणनीतिक कार्य से निर्धारित होते है।

10. हम कैसे जीत सकते हैं?

यदि आपका आंदोलन या अभियान, लोकप्रिय एकता, यथार्थपरक योजना और अहिंसक अनुशासन द्वारा विकसित हुआ है तो आपके पास जीतने का एक बेहतर मौका होगा।

एकता महत्वपूर्ण है, नागरिक प्रतिरोध तब तक शक्तिशाली हैं जब तक वे बहुमत की इच्छा और प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि एक आंदोलन में भाग लेना एक स्वैच्छिक निर्णय होता है। लोग इसमें शामिल होते हैं और जोखिम लेते हैं क्योंकि वे आंदोलन में विश्वास करते हैं। अगर इसमें एकता का अभाव है अथवा लक्ष्य के प्रति संदेह है तो लोगों की भागीदारी प्रभावित होगी। आम तौर पर, सफल नागरिक प्रतिरोध आंदोलनों ने पुरुषों और महिलाओं को एक साथ लाया है; बच्चों, मध्यम आयु वर्ग के लोगों और बुजुर्ग; विविध धार्मिक और जातीय पृष्ठभूमि वाले; छात्रों, मजदूरों, बुद्धिजीवियों, व्यापार समुदाय के सदस्यों और अन्य लोगों के मध्य एकजुटता स्थापित करते हुये।

नागरिक प्रतिरोध मे योजना आवश्यक है । एक नायक के द्वारा आंदोलन मे संगठन और रणनीति से संचालित बल को ढालना और निर्देशित करना आवश्यक है। नागरिक प्रतिरोध में नेता, कई सामरिक निर्णय लेते हैं, जैसे कि उनके संसाधनों का निर्माण कैसे करना है, इन संसाधनों का उपयोग कैसे करना सबसे अच्छा है, उनके शत्रुओं की कमजोरियों का कैसे फायदा उठाना है, और प्रतिवादियों के खिलाफ कैसे बचाव करना है। अच्छी योजना बनाने के लिए दो प्रकार के ज्ञान की आवश्यकता है सबसे पहले, रणनीतिकारियों को राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक स्थितियों के बारे में विस्तृत ज्ञान की आवश्यकता होती है और उन्हें समाज में विभिन्न समूहों के हितों और आकांक्षाओं को समझना चाहिए। दूसरा, आंदोलन रणनीतिकारों को यह जानने की जरूरत है कि नागरिक प्रतिरोध कैसे काम करता है, जिसे निजी अनुभव से पढ़ा जा सकता है- जैसे कि किताबें, फिल्मों और इंटरनेट जैसे संसाधनों से और उन लोगों के साथ संवाद करने से जो नागरिक प्रतिरोध और राजनीतिक आयोजन में अनुभव रखते हैं।

अहिंसात्मक अनुशासन महत्वपूर्ण है क्योंकि एक आंदोलन द्वारा होने वाली हिंसा, प्रतिरोध की प्रभावशीलता को कम करती है, जिससे प्रतिद्वंदी को दमन का औचित्य स्थापित करने का अवसर मिल जाता है। इसके अलावा, जब एक प्रतिरोध आंदोलन हिंसा में संलग्न है, तो अक्सर वह समाज में लोगों की भागीदारी को खो देता है जो हिंसा मे शामिल होने का जोखिम नहीं उठाएंगे। जब कोई आंदोलन - पुलिस और सैन्य के खिलाफ हिंसा का उपयोग करता है, तो शासन के रक्षकों की वफादारी को बांटना असंभव हो जाता है, और उन रक्षकों के बीच आंदोलन के लिए किसी भी सहानुभूति की संभावना समाप्त हो जाती है। सत्ता के दायरे में नागरिक अधिकारों के दमन के ख़िलाफ़ केवल सुनियोजित नागरिक प्रतिरोध से ही एक स्वाधीन और बेहतर समाज और शासन व्यवस्था स्थापित करने संभावना बनती है।

उद्धरण

"यह वास्तव में एक व्यापक जनांदोलन था जिसने दक्षिण अफ्रीका में परिवर्तन ला दिया .....जिसने राज्य पर निर्णायक दबाव बनाया - जिससे परिवर्तन प्रारम्भ हुआ .....एक ऐसी परिस्थिति खड़ी कर दी जहाँ नागरिक प्रतिरोध के समक्ष राजसत्ता को झुकना ही पड़ा"

- डॉ जेनेट चेरी

"आंदोलन का महत्वपूर्ण पक्ष है लोगों का ध्यान आकर्षित करना। एक ऐसे स्थान जहाँ लोगों की दृष्टि ही न जाये वहां आंदोलन निष्फल प्रयास की तरह हो सकता है। आपके आंदोलन की सफलता लोगों द्वारा उसके पक्ष में संवाद करने और भागीदार होने के साथ ही सुनिश्चित होती है"

- मैकिसली जैक

"अहिंसक प्रयासों के साथ कठिनाई यह है कि वे कठिन अनुशासन और प्रशिक्षण की आवश्यकता को नहीं पहचानते हैं। नागरिक प्रतिरोधों के लिये रणनीति और योजना बनाना और समग्र तैयारी एक आंदोलन की शक्ल में होनी चाहिये . . . . .ऐसा सहज नहीं हो सकता है इसे व्यवस्थित किया जाना चाहिए"

- रूव जेम्स लॉसन

"दमन प्रति उत्पादक होता है, क्योंकि यह कार्रवाई और प्रतिक्रिया के तीसरे न्यूटन नियम की तरह है .....जब आप दमन के स्तर को बढ़ाते हैं, प्रतिरोध भी बढ़ जाता है"

-इवन मैरॉविक